रविवार 24 मई, 2020

विषय — आत्मा और शरीर

स्वर्ण पाठ: भजन संहिता 62 : 1

"सचमुच मैं चुपचाप होकर परमेश्वर की ओर मन लगाए हूं; मेरा उद्धार उसी से होता है।"

उत्तरदायी अध्ययन: **भजन संहिता 121 : 1-8**

1 मैंअपनी आंखें पर्वतों की ओर लगाऊंगा। मुझे सहायता कहां से मिलेगी?
2 मुझे सहायता यहोवा की ओर से मिलती है, जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है॥
3 वह तेरे पांव को टलने न देगा, तेरा रक्षक कभी न ऊंघेगा।
4 सुन, इस्राएल का रक्षक, न ऊंघेगा और न सोएगा॥
5 यहोवा तेरा रक्षक है; यहोवा तेरी दाहिनी ओर तेरी आड़ है।
6 न तो दिन को धूप से, और न रात को चांदनी से तेरी कुछ हानि होगी॥
7 यहोवा सारी विपत्ति से तेरी रक्षा करेगा; वह तेरे प्राण की रक्षा करेगा।
8 यहोवा तेरे आने जाने में तेरी रक्षा अब से ले कर सदा तक करता रहेगा॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 34 : 22

22 यहोवा अपने दासों का प्राण मोल लेकर बचा लेता है; और जितने उसके शरणागत हैं उन में से कोई भी दोषी न ठहरेगा॥

2. भजन संहिता 35 : 9 (मेरे)

9 ...मैं यहोवा के कारण अपने मन में मगन होऊंगा, मैं उसके किए हुए उद्धार से हर्षित होऊंगा।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

3. I राजा 17 : 1, 8, 9, 17-24

1 और तिशबी एलिय्याह जो गिलाद के परदेसियों में से था उसने अहाब से कहा, इस्राएल का परमेश्वर
यहोवा जिसके सम्मुख मैं उपस्थित रहता हूँ, उसके जीवन की शपथ इन वर्षों में मेरे बिना कहे, न तो
मेंह बरसेगा, और न ओस पड़ेगी।
8 तब यहोवा का यह वचन उसके पास पहुंचा,
9 कि चलकर सीदोन के सारपत नगर में जा कर वहीं रह: सुन, मैं ने वहां की एक विधवा को तेरे
खिलाने की आज्ञा दी है।
17 इन बातों के बाद उस स्त्री का बेटा जो घर की स्वामिनी थी, रोगी हुआ, और उसका रोग यहां तक बढ़ा
कि उसका सांस लेना बन्द हो गया।
18 तब वह एलिय्याह से कहने लगी, हे परमेश्वर के जन! मेरा तुझ से क्या काम? क्या तू इसलिये मेरे यहां
आया है कि मेरे बेटे की मृत्यु का कारण हो और मेरे पाप का स्मरण दिलाए?
19 उसने उस से कहा अपना बेटा मुझे दे; तब वह उसे उसकी गोद से ले कर उस अटारी पर ले गया जहां
वह स्वयं रहता था, और अपनी खाट पर लिटा दिया।
20 तब उसने यहोवा को पुकार कर कहा, हे मेरे परमेश्वर यहोवा! क्या तू इस विधवा का बेटा मार डाल
कर जिसके यहां मैं टिका हूं, इस पर भी विपत्ति ले आया है?
21 तब वह बालक पर तीन बार पसर गया और यहोवा को पुकार कर कहा, हे मेरे परमेश्वर यहोवा! इस
बालक का प्राण इस में फिर डाल दे।
22 एलिय्याह की यह बात यहोवा ने सुन ली, और बालक का प्राण उस में फिर आ गया और वह जी उठा।
23 तब एलिय्याह बालक को अटारी पर से नीचे घर में ले गया, और एलिय्याह ने यह कहकर उसकी माता
के हाथ में सौंप दिया, कि देख तेरा बेटा जीवित है।
24 स्त्री ने एलिय्याह से कहा, अब मुझे निश्चय हो गया है कि तू परमेश्वर का जन है, और यहोवा का जो
वचन तेरे मुंह से निकलता है, वह सच होता है।

4. भजन संहिता 116 : 1, 3, 4, 7, 8

1 मैंप्रेम रखता हूं, इसलिये कि यहोवा ने मेरे गिड़गिड़ाने को सुना है।
3 मृत्यु की रस्सियां मेरे चारोंओर थीं; मैं अधोलोक की सकेती में पड़ा था; मुझे संकट और शोक भोगना
पड़ा।
4 तब मैं ने यहोवा से प्रार्थना की, कि हे यहोवा बिनती सुन कर मेरे प्राण को बचा ले!
7 हे मेरे प्राण तू अपने विश्राम स्थान में लौट आ; क्योंकि यहोवा ने तेरा उपकार किया है॥
8 तू ने तो मेरे प्राण को मृत्यु से, मेरी आंख को आंसू बहाने से, और मेरे पांव को ठोकर खाने से बचाया है।

5. मत्ती 16 : 13-18, 20, 21, 24-28

13 यीशु कैसरिया फिलिप्पी के देश में आकर अपने चेलों से पूछने लगा, कि लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं?
14 उन्होंने कहा, कितने तो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला कहते हैं और कितने एलिय्याह, और कितने यिर्मयाह या भविष्यद्वक्ताओं में से कोई एक कहते हैं।
15 उस ने उन से कहा; परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?
16 शमौन पतरस ने उत्तर दिया, कि तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।
17 यीशु ने उस को उत्तर दिया, कि हे शमौन योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लोहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है।
18 और मैं भी तुझ से कहता हूं, कि तू पतरस है; और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा: और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।
20 तब उस ने चेलों को चिताया, कि किसी से न कहना! कि मैं मसीह हूं।
21 उस समय से यीशु अपने चेलों को बताने लगा, कि मुझे अवश्य है, कि यरूशलेम को जाऊं, और पुरनियों और महायाजकों और शास्त्रियों के हाथ से बहुत दुख उठाऊं; और मार डाला जाऊं; और तीसरे दिन जी उठूं।
24 तब यीशु ने अपने चेलों से कहा; यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले।
25 क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा; और जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा।
26 यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा?
27 मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएगा, और उस समय वह हर एक को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा।
28 मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो यहां खड़े हैं, उन में से कितने ऐसे हैं; कि जब तक मनुष्य के पुत्र को उसके राज्य में आते हुए न देख लेंगे, तब तक मृत्यु का स्वाद कभी न चखेंगे।

6. 1 कुरिन्थियों 6 : 19 (जानना), 20

19 ...क्या तुम नहीं जानते, कि तुम्हारी देह पवित्रात्मा का मन्दिर है; जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है, और तुम अपने नहीं हो?
20 क्योंकि दाम देकर मोल लिये गए हो, इसलिये अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो॥

7. भजन संहिता 103 : 1-4

1 हेमेरे मन, यहोवा को धन्य कह; और जो कुछ मुझ में है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहे!
2 हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और उसके किसी उपकार को न भूलना।
3 वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता, और तेरे सब रोगों को चंगा करता है,
4 वही तो तेरे प्राण को नाश होने से बचा लेता है, और तेरे सिर पर करूणा और दया का मुकुट बान्धता है,

8. 1 थिस्सलुनीकियों 5 : 23 (यह)

23 ...शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे; और तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 210 : 11-16

यह जानकर कि आत्मा और उसकी विशेषताओं को हमेशा मनुष्य के माध्यम से प्रकट किया गया था, मास्टर ने बीमारों को चंगा किया, अंधे को दृष्टि दी, बधिर को सुना, पैरों को लंगड़ा किया, इस प्रकार दिव्य की वैज्ञानिक कार्रवाई को प्रकाश में लाया मानव मन और शरीर पर मन और आत्मा और मोक्ष की बेहतर समझ देना।

2. 114 : 23-29

क्रिश्चियन साइंस मानसिक के रूप में सभी कारणों और प्रभाव को बताता है, शारीरिक नहीं। यह आत्मा और शरीर से रहस्य का पर्दा उठाता है। यह भगवान के लिए मनुष्य के वैज्ञानिक संबंध को दर्शाता है, जा रहा है की अंतरनिहित अस्पष्टताओं को हटा देता है, और कैद किए गए विचारों को मुक्त करता है। दिव्य विज्ञान में, मनुष्य सहित ब्रह्मांड, आध्यात्मिक, सामंजस्यपूर्ण और शाश्वत है।

3. 477 : 19-25

सवाल। - शरीर और आत्मा क्या हैं?

उत्तर। - पहचान आत्मा का प्रतिबिंब है, जीवित सिद्धांत, प्रेम के विविध रूपों में प्रतिबिंब है। आत्मा ही मनुष्य का पदार्थ, जीवन और बुद्धिमत्ता है, जो व्यक्तिगत है, लेकिन पदार्थ में नहीं। आत्मा कभी भी किसी भी चीज को हीन नहीं कर सकती

4. 338 : 1-8

क्रायश्चियन साइंस, ठीक से समझा जाता है, शाश्वत सद्भाव की ओर जाता है। यह एकमात्र जीवित और सच्चे भगवान और मनुष्य को प्रकाश में लाता है जैसा कि उनकी समानता में बनाया गया है; जबकि विपरीत धारणा - कि मनुष्य पदार्थ में उत्पन्न होता है और आरंभ और अंत होता है, वह आत्मा और शरीर दोनों है, अच्छाई और बुराई दोनों, आध्यात्मिक और भौतिक दोनों - कलह और मृत्यु दर में समाप्त होते हैं, उस त्रुटि में जिसे सत्य द्वारा नष्ट किया जाना चाहिए।

5. 119 : 25-6

सूर्योदय को देखने में, कोई पाता है कि यह इंद्रियों के सामने सबूतों का खंडन करता है कि यह विश्वास है कि पृथ्वी गति में है और सूर्य आराम के लिए है। चूंकि खगोल विज्ञान सौर प्रणाली के आंदोलन की मानवीय धारणा को उलट देता है, इसलिए ईसाई विज्ञान आत्मा और शरीर के प्रतीत होने वाले संबंध को उलट देता है और शरीर को मन की सहायक बनाता है। इस प्रकार यह मनुष्य के साथ है, जो संयमशील मन का विनम्र सेवक है, हालांकि यह समझदारी को अन्यथा प्रकट करता है। लेकिन हम इसे कभी नहीं समझेंगे जबकि हम स्वीकार करते हैं कि आत्मा शरीर या मन में है, और वह आदमी गैर-बुद्धि में शामिल है। आत्मा या आत्मा, ईश्वर, अपरिवर्तनीय और शाश्वत है; और मनुष्य आत्मा, ईश्वर के साथ सह-अस्तित्व रखता है, क्योंकि मनुष्य ईश्वर की छवि है।

6. 223 : 2-6

पाल ने कहा, "आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे।" जल्दी या बाद में हमें पता चलेगा कि मनुष्य की परिमित क्षमता के भ्रूण को इस भ्रम से मजबूर किया जाता है कि वह आत्मा के बजाय आत्मा के स्थान पर शरीर में रहता है।

7. 122 : 29-10

हमारे सिद्धांत आत्मा और शरीर के बारे में वही गलती करते हैं जो टॉलेमी ने सौर मंडल के बारे में की थी। वे जोर देकर कहते हैं कि आत्मा शरीर और मन में है इसलिए सामग्री के लिए सहायक है। खगोलीय विज्ञान ने खगोलीय पिंडों के संबंधों के रूप में झूठे सिद्धांत को नष्ट कर दिया है, और क्रिश्चियन साइंस निश्चित रूप से हमारे स्थलीय निकायों के रूप में अधिक से अधिक त्रुटि को नष्ट कर देगा। तब मनुष्य का वास्तविक विचार और सिद्धांत प्रकट होगा। टॉलेमिक विस्फोट आत्मा और शरीर से संबंधित त्रुटि के रूप में होने के सामंजस्य को प्रभावित नहीं कर

सका, जो विज्ञान के आदेश को उलट देता है और आत्मा की शक्ति और विशेषाधिकार को भौतिक करने के लिए असाइन करता है, जिससे कि मनुष्य सबसे कमजोर और धार्मिक प्राणी बन जाता है ब्रम्हांड।

8. 39 : 10-17

आत्मा के शरीर में जो शिक्षित विश्वास है, वह मृत्यु को मित्र के रूप में मृत्यु का कारण बनाता है, मृत्यु दर अमरता और आनंद में एक कदम-पत्थर के रूप में। बाइबल मृत्यु को शत्रु कहती है, और यीशु ने मृत्यु और कब्र को उखाड़ने के बजाय उसे खत्म कर दिया। वह "रास्ता" था। उसके लिए, इसलिए, मृत्यु वह दहलीज नहीं थी जिस पर उसे जीवित वैभव में गुजरना चाहिए।

9. 311 : 14-25

आत्मा के झूठे अनुमानों के माध्यम से भावना और मन में निवास के रूप में सामग्री में विश्वास, अस्थायी नुकसान या आत्मा की अनुपस्थिति, आध्यात्मिक सत्य की भावना में संघर्ष करता है। त्रुटि की यह स्थिति जीवन और पदार्थ में मौजूद पदार्थ के रूप में जीवन का नश्वर सपना है, और होने की अमर वास्तविकता के सीधे विपरीत है। जब तक हम मानते हैं कि आत्मा पाप कर सकती है या वह अमर आत्मा नश्वर शरीर में है, हम विज्ञान के होने को कभी नहीं समझ सकते। जब मानवता इस विज्ञान को समझती है, तो यह मनुष्य के लिए जीवन का नियम बन जाएगा, - यहां तक कि आत्मा का उच्च नियम, जो सद्भाव और अमरता के माध्यम से भौतिक अर्थों पर हावी है।

10. 280 : 25-6

ठीक से समझा, एक भावुक सामग्री के रूप में रखने के बजाय, मनुष्य के पास एक संवेदनाहीन शरीर है; और ईश्वर, मनुष्य की आत्मा और सभी अस्तित्व की, अपने स्वयं के व्यक्तित्व, सद्भाव, और अमरता में सदा रहने वाले, मनुष्य में इन गुणों को लागू करते हैं, - मन के माध्यम से, कोई बात नहीं। मानवीय मतों का मनोरंजन करने और विज्ञान होने को अस्वीकार करने का एकमात्र बहाना हमारी आत्मा का नश्वर अज्ञान है, - अज्ञान जो केवल दिव्य विज्ञान की समझ के लिए उपजता है, वह समझ जिसके द्वारा हम पृथ्वी पर सत्य के राज्य में प्रवेश करते हैं और सीखते हैं कि आत्मा अनंत और सर्वोच्च। आत्मा और सामग्री प्रकाश और अंधेरे से अधिक नहीं है। जब एक प्रकट होता है, तो दूसरा गायब हो जाता है।

11. 467 : 17-23

विज्ञान आत्मा, अंतर आत्मा को प्रकट करता है, जैसा कि शरीर में नहीं है, और भगवान मनुष्य में नहीं, बल्कि मनुष्य द्वारा परिलक्षित होता है। इससे कम में अधिक नहीं हो सकता। विश्वास है कि कम में अधिक हो सकता है

एक त्रुटि है कि विफल हो जाता है। यह आत्मा विज्ञान में एक प्रमुख बिंदु है, कि सिद्धांत इसके विचार में नहीं है। आत्मा, अंतर आत्मा, मनुष्य में सीमित नहीं है, और कभी भी भौतिक नहीं है।

12. 335 : 16 (अन्त: मन)-18 (*से 2nd .*), 22-24

अंतर: मन और आत्मा एक है, भगवान और आत्मा एक हैं, और यह एक सीमित दिमाग या एक सीमित शरीर में कभी भी शामिल नहीं है। ... क्योंकि आत्मा अमर है, यह मृत्यु दर में मौजूद नहीं है। ... आत्मा के झूठे अर्थों को खोने के द्वारा ही हम जीवन के अनन्त जीवन को प्रकाश में लाए गए अमरत्व को प्राप्त कर सकते हैं।

13. 477 : 26 *केवल*

मनुष्य आत्मा की अभिव्यक्ति है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना

चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6